सादर प्रकाशनार्थ

संस्कारो से विमुख होती भावी पीढ़ी

—— मुनि जयंत कुमार

एक गांव में घर की दूसरी मंजिल पर बने कमरें में खडा था। गांव का निरव वातावरण मन को असीम शांती से सराबोर कर रहा था। इस शांति ने मुझे गांवो की ओर आकर्षित किया। लगा आज गांवो में भारत की प्राचीन छवि को देख सकते हैं। यहां की जीवनशैली में देश की अध्यात्म परम्परा जागृत है, देश की खातिर कुछ कर गुजरने का जज्बा है। ऐसे ही विचारो में खोया हुआ था कि एक शब्दावली ने मुझे चकित कर दिया। पास ही के एक झौपड़ीनुमा घर में मां की डांट पर छोटे बालक के मुंह से निकलने वाली वो शब्दावली थी ''राम नाम सत है धारो बेटो अठे कोनी बठे है'' इस तरह के बोल एक बच्चे के मुंह से निकलना और वो भी गांव के बालक के मुंह से, जहां पर न ऐशो–आराम है, न बिगड़ेल वातावरण है। फिर इन बच्चो मे क्यों माता पिता के प्रति विद्रोह की भावना पैदा हो जाती है। क्यों बचपन में ही गाली गलोच और निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग करने लग जाते हैं। इतना तो सुना है कि गांवो के बच्चे हद पार नही करते पर शहरी वातावरण में रहने वाला बालक गोली से उड़ाने की धमकी तक दे देता है। विदेशों के स्कूलों मे तो ऐसी घटनाएं घट चुकी है। छोटी सी उम्र मे हिंसा के संस्कार, गोली की भाषा यह कहां तक उचित है। इन प्रश्नों के समाधान हेतु मस्तिष्क मे मंथन प्रारम्भ हो गया। जो कुछ समय पहले शांति के हिलोरे ले रहा था वही मन संस्कारो से विमुख होते ही भावी पीढ़ी के लिए तड़प उठा। अनेक पहलुओं पर समग्र दृष्टियों से मंथन करने के बाद इन बिन्दुओं पर ध्यान गया।

शिक्षा का अभाव :– भारत सरकार शिक्षा के लिए जागरूक है। पर सरकारी कार्य कितने जमीनी होते हैं, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। इसका अहसास हमने गांवो की पदयात्रा में किया। हमने ऐसे अनेक गांव देखे जहां विद्यालय केवल पोषाहार तक सीमित हो गये हैं। कहीं शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है तो 60 प्रतिशत बच्चे ही उस तक पहंच पाते है। इस कमी के साथ एक महत्वपूर्ण कमी ध्यान में आई, वो है शिक्षा को केवल किताबी ज्ञान तक समेट दिया गया है। उसमें संस्कार निर्माण पर दृष्टिपात ही नहीं किया गया है। प्राचीन परम्परा मे शिक्षा के साथ सद्संस्कारों का बिजारोपण किया जाता था। आज अपेक्षा है गांवो मे बसने वाले बच्चो के अभिभावकों में शिक्षा एवं संस्कार के प्रति जागरूकता पैदा की जाये और शिक्षा में सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जावें।

टेलीविजन की पहुॅच :– गांवो मे रहने वाले ऐसे अनेक परिवार देखने को मिले जिनके पास रहने को पक्का मकान नहीं है और पहनने को साफ सुथरे कपडे नहीं है, पर उन घरों में टेलीविजन जरूर है। आज टेलीविजन छोटे से छोटे गांव में, ढाणी में पहुंच गया है। गरीब परिवार भी इसके बिना नहीं रह सकता। वैसे टेलीविजन के बहुत से फायदे हैं। इसके द्वारा विश्व की खबरों पर नजर रखी जा सकती है। पर कुछ चैनलों पर ऐसी सामग्री परोसी जाती है जिससे बालमन पर हिंसा, अपराध और सैक्स हावी होने लग जाता है। अगर इन पर सैंसर लगे और मीडिया वाले अहिंसात्मक दृश्य भी दिखाये तब तो टेलीविजन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अन्यथा संस्कार हनन् का कारण बन रहा है। इसके कारण न केवल गांवों के बच्चे बल्कि शहरों,महानगरों में बसने वाले सभ्रांत परिवारो के बच्चे भी संस्कारो से विमुख हो रहे है

उच्च वातावरण न मिलना :– आदिवासी लोगों मे धुम्रपान आम बात है। जब बड़े नशे में डूबे रहते हैं तो बच्चों को इस ओर बढ़ने से कैसे रोक सकते हैं। बालक इन दृश्यों को प्रतिदिन देखता है, अपने दोस्तों से इस विषय पर चर्चा करता है। दोस्तो को भी अगर ऐसे दृश्य देखने को मिले हैं तो उनके मन मे नशीले पदार्थो का सेवन करने की इच्छा पैदा हो जाती है। एक से ज्यादा का जब किसी वस्तु के प्रति समर्थन मिल जाता है तो उसको प्रयोग में लेने से हिचकिचाहट नहीं रहती है। वर्तमान में तो जो भी महानगर में रहता है, पुंजीपति है, ऐसे ही अय्याश लोगों के साथ उठता बैठता है, तो वहां पर शराब का सेवन प्रतिष्ठा का सवाल हो जाता है। ऐसी स्थिति मे भावी पीढ़ी को बचाकर रखना बहुत कठिन है।

इन कारणों के अलावा एकल परिवार की बढ़ती प्रथा भी इसमें योगभूत बन रही है। शहरों में अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं होता है। आया के भरोसे पलने वाले बच्चे संस्कारी बन सके, इसमें प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। बच्चों पर पढाई को वजन भी बहुत ज्यादा रहता है, वो भी अपने दादा–दादी के पास बैठ नही पाते है, यह भी एक कारण है। होस्टल में रहने वाले बच्चे तो अपने साथियों के भरोसे होते हैं। उनके भीतर कैसे संस्कार पनप रहे हैं, इन सबसे अभिभावक अनजान रहते हैं। आज ईन्टरनेट, मोबाईल भी संस्कारों के हनन का कारण बन गये है। यह सुविधाएं प्रदान करते हैं, पर अतिरिक्त उपयोग से इनके दुष्परिणाम सामने आ गये हैं। आवश्यकता है अभिभावकगण अपने बालकों को हर क्षैत्र में अति करने से रोकें, जिससे सुखद परिणाम सामने आ सकेंगे।

मन बदला

बहुत समय पहले एक चंपक पुर नाम का नगर था। उस गांव मे रामु नाम का एक नेक दिल किसान रहता था। उसके परिवार मे बस दो ही जने थे, वो और उसकी पत्नी उसका घर जंगल के पास मे ही था। एक बार रामु को किसी काम से शहर जाना था। चंपक पुर और शहर के बीच मे ही एक नंदनवन नाम का घना जंगल था। जिसमे राकु नाम का एक राक्षस रहता था। जो कोई भी व्यक्ति उस रास्ते से जाता उसको वह मार कर खा जाता था। राकु को आज तक किसी ने नही देखा था, वो एक बड़े सारे पेड़ पर बैठता था, और आने वाले लोगों को खा जाता। तो जब रामु शहर जाने के लिए निकलने लगा तो उसकी पत्नी एवं मित्रों ने उससे कहा कि तुम ध्यान से जाना क्यों कि शहर जाने वाले लोग गायब हो जाते है। तब रामु ने कहा कि मैं ध्यान रखूंगा। तो रामु शहर के लिए रवाना हुआ। तो रामु शहर के लिए रवाना हुआ। जब वह जंगल के अन्दर से जा रहा था तो राकु ने पेड़ पर बैठे हुए उसे देख लिया। तो राकु ने सोचा क्यों न में आज बडा हाथ मारू जिससे दो–तीन आदमी मिल जाए। तो राकु विद्या से एक लकडहारे का रूप बनाता है और थोडा आगे जाकर घायल होकर बैठ गया। इधर जब रामु ने आते हुए रास्ते को राकु को कराहते हुए देखा तो अपने स्वभाव के कारण वो उसके पास गया और बोला मित्र तुम्हारे पैर को क्या हुआ। और तुम कौन हो। तो राकु ने कहा कि मैं एक लकडहारा हूँ और जब मै लकडीयां काट रहा था तो असावधानी वश मेरे पैर को कुल्हाडी लग गयी। रामु ने उसके पैर से बहते हुए खून को देखा तो तुरन्त अपनी धोती को फाड कर उसके पैर पर बांध दिया और कहा मित्र में तुम्हार लिए लकडिया काट देता हूँ। तुम तो घायल हो। यह कह कर रामु लकडिया कांटने लगा, थोडी ही देर मे उसने काफी लकडीया काट ली, फिर उनका गठ्ठर बांध दिया। लकडिया काटते हुए वह काफी थक गया था। उसे भूख लगने लगी तो उसने अपने पास पोटली में रखे हुए लड्डु निकाले और राकु को देते हुए बोला कि थोडे तुम भी खा लो। फिर लड्डु खाने के बाद रामु ने राकु को कहां कि तुम्हारा पैर घायल है, तुम अभी मेरे घर चलों मे कल शहर चला जाउंगा। जैसे ही राकू ने यह सुना तो सोचा कि चलो आज तो दो–तीन जन मिल जाएंगे, बडा मजा आएगा। फिर रामु उसको सहारा दते हुए अपने घर लेकर आया। तब तक शाम हो गयी थी। तब उसकी पत्नी ने कहां कि आप अभी तक शहर नहीं गये और यह व्यक्ति कौन है, तब रामु ने उसको पुरी बात बतायी और कहा कि आज यह अपने घर ही रहेगा, इसके लिए थोडी मलहम पट्टी लेकर आओ तो उसकी पत्नी ने मलहम पट्टी लाकर राकु के पैरों पर लगायी और सोने के लिए एक पलंग दे दिया और कहा कि रात को यदि जरूरत पडे तो आवाज दे देना। सब सो गये तो राकु उठा और राक्षस का रूप बना लिया और रामु और उसकी पत्नी के कमरे कि तरफ जाने लगा पर जैसे ही वह कमरे तक पहुँचा उसके पैर ठिठक गये। वह सोचने लगा कि मै उस वयक्ति को कैसे मार सकता हूँ, जिसने मेरे लिए अपना काम छोड कर भी मेरी मदद कि, ऐसे नेकदिल इंसान तो इंसान के रूप मे भगवाते होते है। मै इनको कभी नही मांरूगा। बल्कि उनके लिए परमात्मा से दुआ करूगा कि वे सदा सलामत रहे, खुश रहे। यह सोचते हुए रामु फिर से जंगल कि और चल पडा।

नचिकेता मुनि अनुशासन कुमार